छोटा रैकून और बाहरी दुनिया

लिलियन मूर

चित्र: गियोया फियामेन्घी

छोटा रैकून और बाहरी दुनिया

लिलियन मूर

चित्र: गियोया फियामेन्घी

छोटा रैकून अपने आस-पास
के जंगल को देख रहा था.

देखने के लिए वहां जंगल के अलावा
और कुछ भी नहीं था.
वहां पर चारों ओर हरे-भरे पेड़ों के अलावा
और कुछ भी नहीं था.

फिर छोटा रैकून सोचने
के लिए बैठा गया.

"माँ," उसने पूछा,
"क्या इस जंगल का कोई अंत है?
क्या जंगल ऐसे ही चलता रहता है —
क्या वो कभी खत्म भी होता है?"
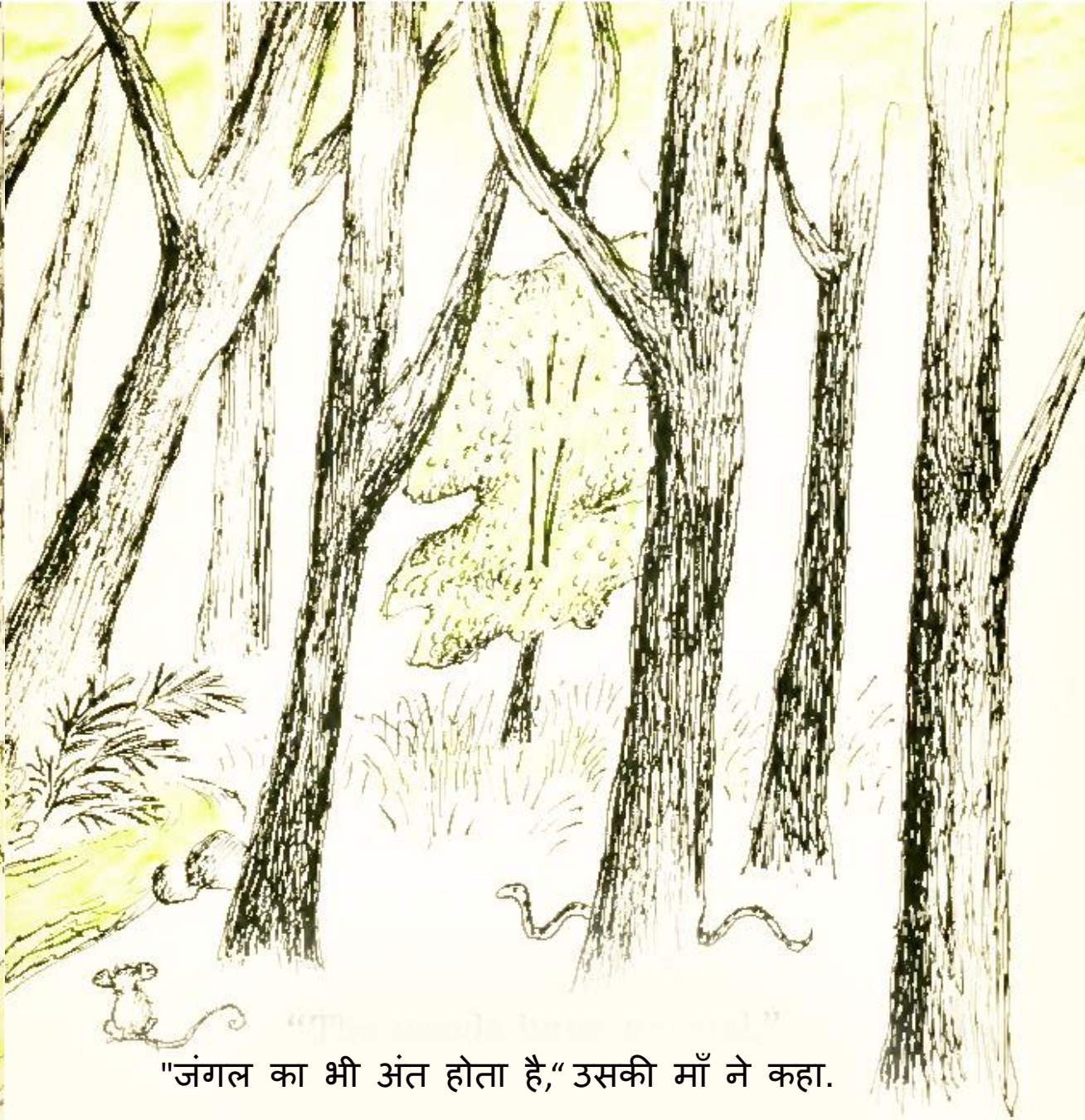
"जंगल का भी अंत होता है," उसकी माँ ने कहा.

"बहती धारा के पार,

चमकदार बेरी की झाड़ियों के पार,

खुली घास के पार

जहाँ छोटा बांझ का पेड़ खड़ा है —

वहां पर जंगल खत्म हो जाता है."

"लेकिन जंगल खत्म होने के बाद
फिर वहां और क्या है —?"
छोटे रैकून ने पूछा.

"बाहरी दुनिया,"
माँ रैकून ने कहा.

"बाहरी दुनिया!"
छोटा रैकून चिल्लाया.
"वो कैसी होती है?"

"उसे समझाना बहुत मुश्किल है,"
उसकी माँ ने कहा.
"अब तुम कुछ देर बाहर
जाकर क्यों नहीं खेलते?"

छोटा रैकून बाहर गया,
लेकिन वह खेला नहीं.
वह वहां पर सोचने के लिए बैठ गया.

तभी माँ स्कंक अपने बच्चों के साथ वहाँ आईं.
छोटा रैकून उछल पड़ा
और उनकी ओर दौड़ा.

"कृपया!" उसने कहा.

"मुझे बताएं, कि बाहर की दुनिया कैसी है?"

"वहाँ दूर?" माँ स्कंक ने कहा.

"बहती धारा के पार,

चमकदार बेरी की झाड़ियों के पार,

खुली घास के पार

जहाँ छोटा बांझ का पेड़ खड़ा है?"

"हाँ! हाँ!" छोटा रैकून चिल्लाया.

"उसे समझाना पाना बहुत मुश्किल है,"

माँ स्कंक ने कहा.

और फिर वो माँ रैकून से मिलने

अंदर चली गईं.

दोनों छोटे स्कंक खेलना चाहते थे,

लेकिन छोटा रैकून सोचना चाहता था.

इसलिए दोनों छोटे स्कंक भी सोचने बैठ गए.

"अगर मैं बहती हुई नदी के पास जाऊँ,"
छोटा रैकून बोला,
"तो मैं वहां एक मछली पकड़ सकता हूँ.
फिर मैं एक बड़ी चट्टान पर खड़ा हो सकता हूँ.
तब शायद मैं बाहरी दुनिया भी देख सकूँ!"

"वाह!" स्कंक चिल्लाए,
"हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे.
शायद हम वहां एक मेंढक पकड़ पाएं!"

छोटा रैकून, दोनों स्कंकों की ओर देखने लगा.
"अच्छा, चलो," उसने कहा.
"लेकिन देखो, ठीक मेरे पीछे रहना,
और जैसा मैं कहूँ वैसा ही करना."

फिर वे बहती धारा की ओर चल पड़े,
दोनों छोटे स्कंक
पूरे रास्ते छोटे रैकून के
ठीक पीछे-पीछे चले.
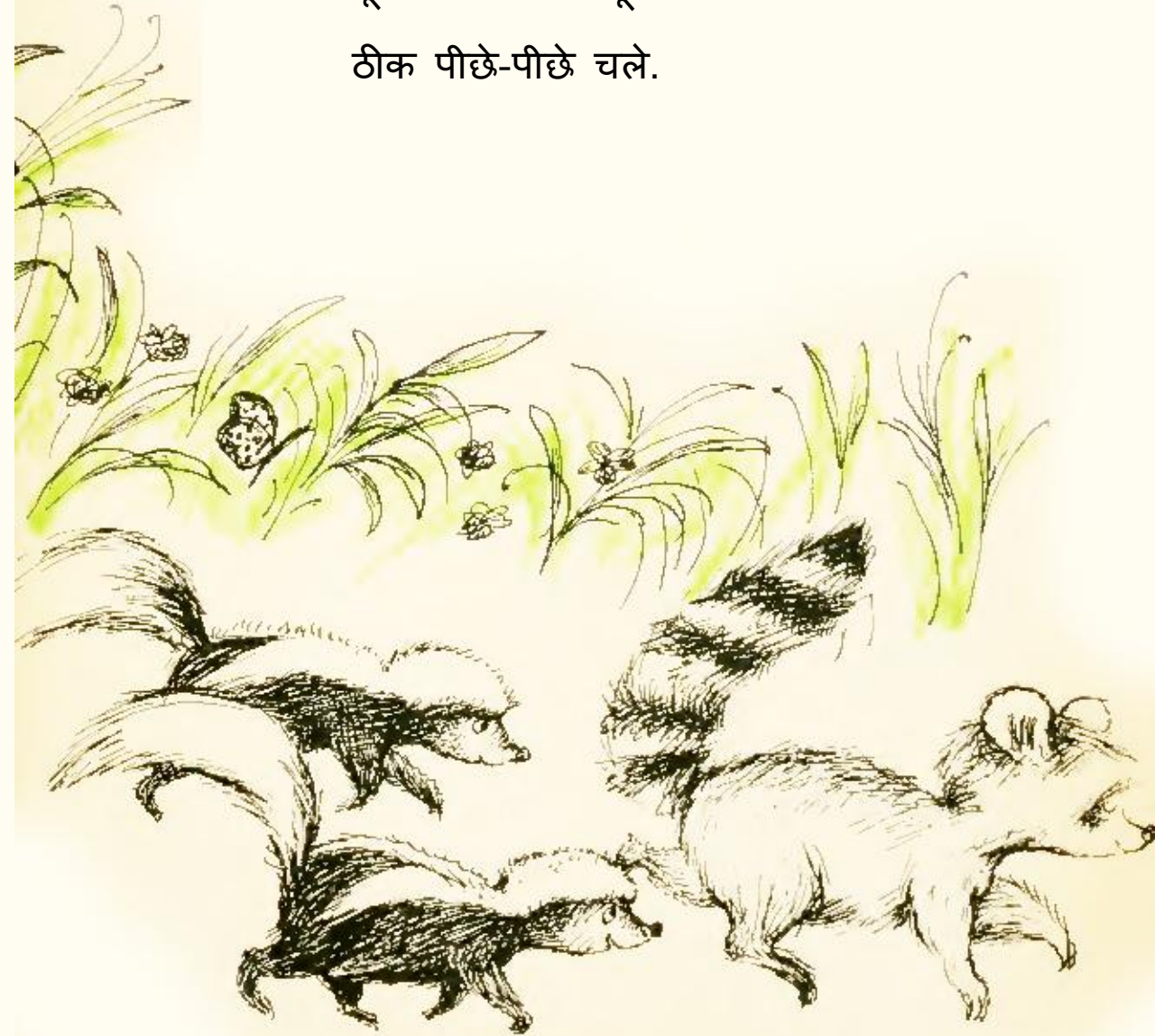
छोटा रैकून एक मछली ढूँढ़ रहा था.

दोनों छोटे स्कंक एक मेंढक ढूँढ़ रहे थे.

जैसे ही उन्होंने एक मेंढक देखा वे उसके पीछे दौड़े.

लेकिन दोनों छोटे स्कंक आपस में टकरा गए,

और मेंढक वहां से भाग गया.
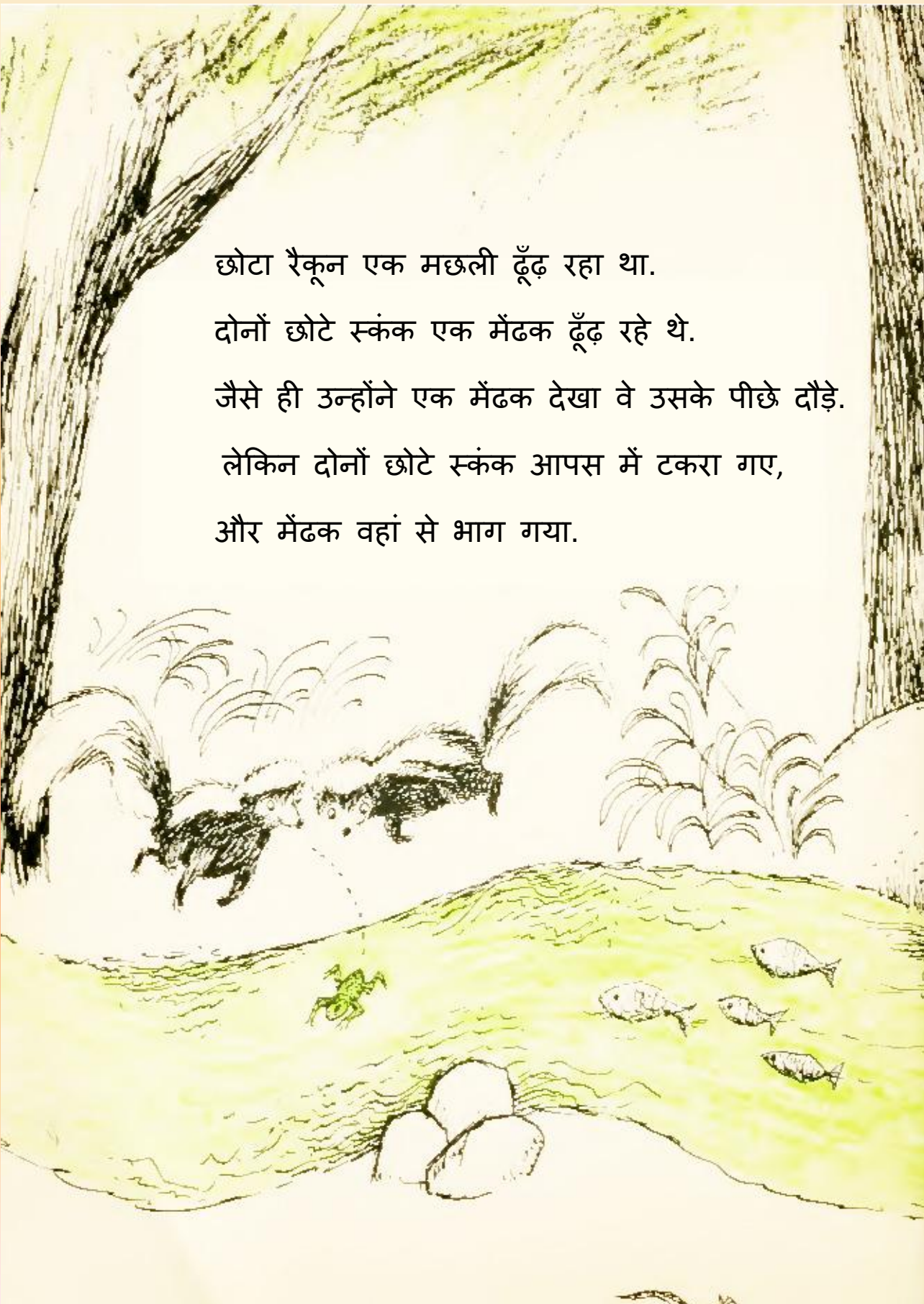
छोटे रैकून ने एक मछली पकड़ी,

फिर वह एक बड़ी चट्टान पर चढ़ा.

लेकिन वहां से उसे बाहरी दुनिया नहीं दिखाई दी.

"अगर मैं बेरी की झाड़ियों तक जाऊँ,"

छोटा रैकून बोला,

"मैं कुछ बेरी खा सकता हूँ.

मैं वहां एक ऊँची झाड़ी पर चढ़ सकता हूँ.

वहां से शायद मुझे बाहरी दुनिया दिखाई दे."

"हमें भी बेरी बहुत पसंद हैं!" स्कंक ने कहा.

"अच्छा, तो फिर चलें,"

छोटा रैकून बोला.

"लेकिन तुम दोनों मेरे ठीक पीछे रहना,

और जैसा मैं कहूँ वैसे ही करना."

वे बेरी की झाड़ियों की ओर चले,

और छोटे स्कंक

छोटे रैकून के ठीक पीछे रहे.

वे मोटे, चमकीले बेर खाते रहे.
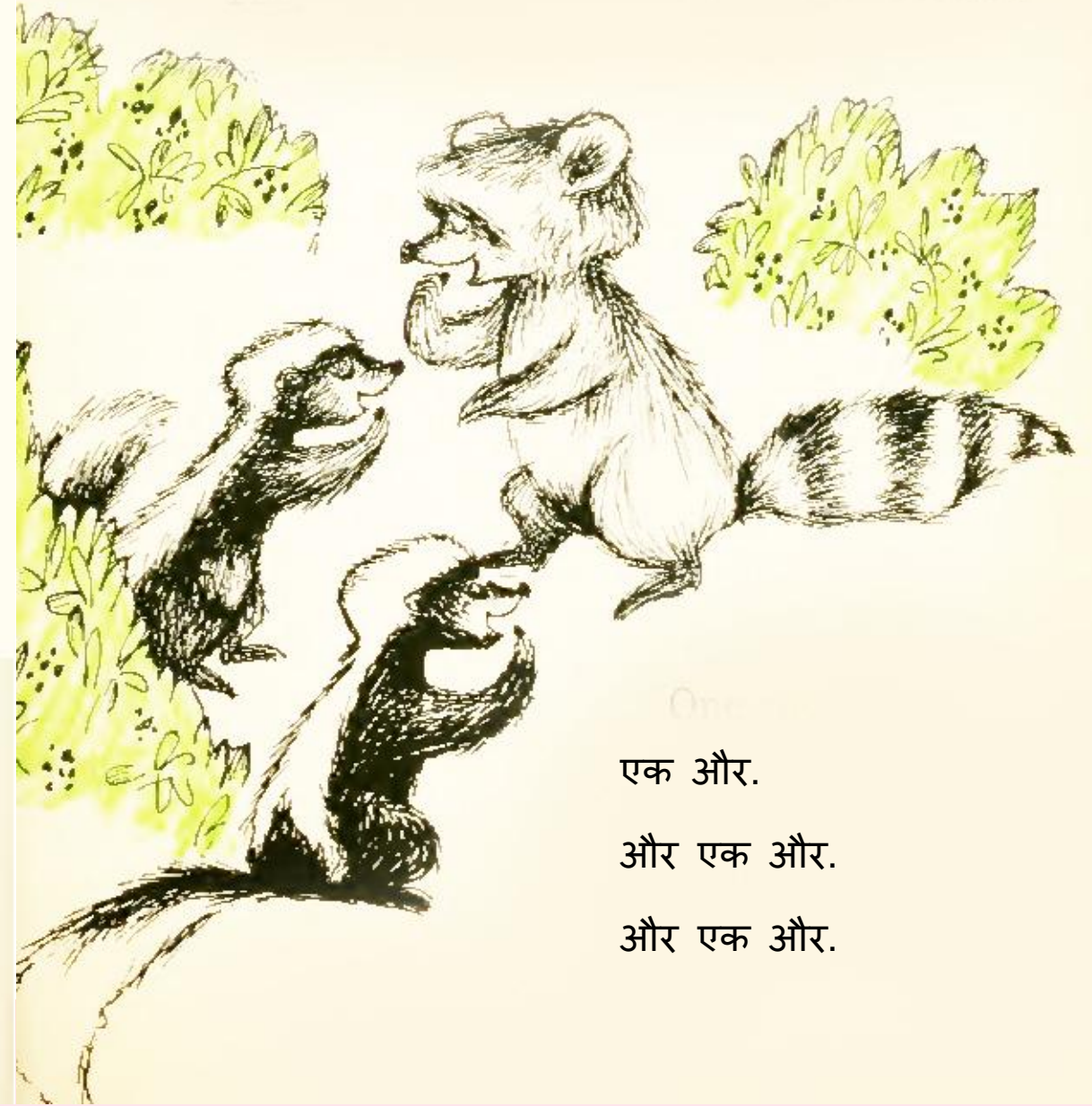
एक और.

और एक और.

और एक और.

फिर छोटा रैकून एक ऊँची झाड़ी पर चढ़ गया.

लेकिन वहां से उसे बाहरी दुनिया दिखाई नहीं दी.
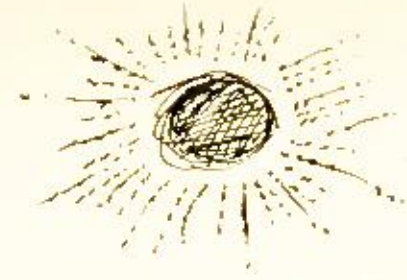
"अगर मैं खुली घास के मैदान पर जाऊँ," उसने कहा,

"तो वहां मैं कुछ कीड़े और रेंगने वाले जीव पकड़ सकता हूँ.

फिर मैं छोटे बांझ के पेड़ पर चढ़ सकता हूँ.

शायद तब मुझे बाहरी दुनिया दिखाई दे."

"हमें कीड़े और रेंगने वाले जीव बहुत पसंद हैं!"

छोटे स्कंक चिल्लाए.

"चलो," छोटा रैकून बोला,

और फिर वे खुली घास के मैदान ही ओर चले.

वे कीड़ों

और रेंगने वाले जीवों के पीछे दौड़े.

और वे खाते ही गए.

फिर छोटा रैकून छोटे बांझ

के पेड़ पर चढ़ गया.

और वहां से उसे कुछ नया दिखाई दिया!

"बस!" छोटा रैकून चिल्लाया.

"यही बाहरी दुनिया होगी!"

"वहां क्या है? वो कैसी है?"

दोनों स्कंकों ने पूछा.

"मैं पता लगाने जा रहा हूँ,"

छोटे रैकून ने कहा.

"वाह!" स्कंक चिल्लाए.

"हम भी चलेंगे!"

इस बार छोटे रैकून ने उन्हें

आने से मना कर दिया.

"तुम अभी बहुत छोटे हो," रैकून ने कहा.

"तुम यहीं रुको.

मैं वापस आकर तुम्हें सब कुछ बताऊँगा."

छोटा रैकून खुली घास के मैदान पर दौड़ता हुआ

जंगल के अंत तक चला गया.
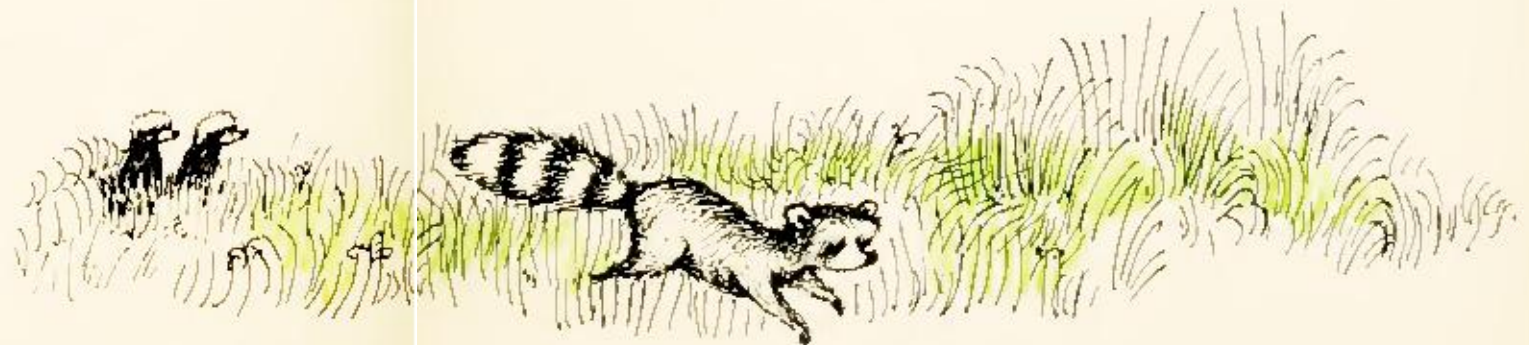
यह क्या है?

वह रुका और देखने लगा.

फिर वह अंदर भागा.

यह क्या है?

शायद वो जंगल में तालाब के ऊपर वाले पेड़ जैसा था.

शायद वो कोई ऐसी चीज़ थी जिस पर दौड़कर जाया जा सके.

छोटा रैकून उस पार भागा.
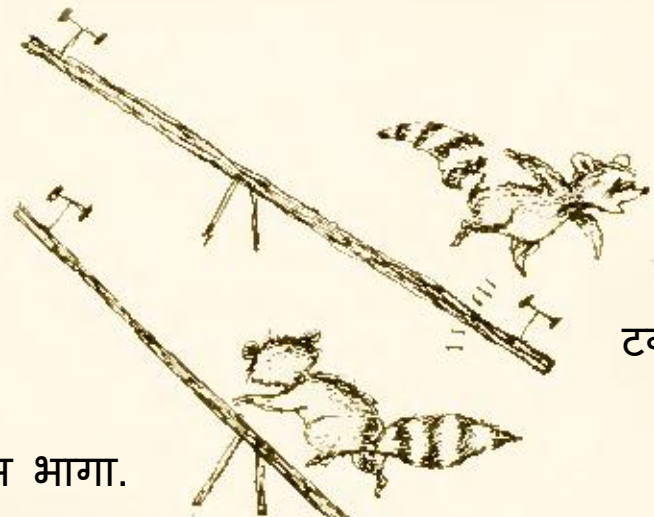
टक्कर!

वह वापस भागा.
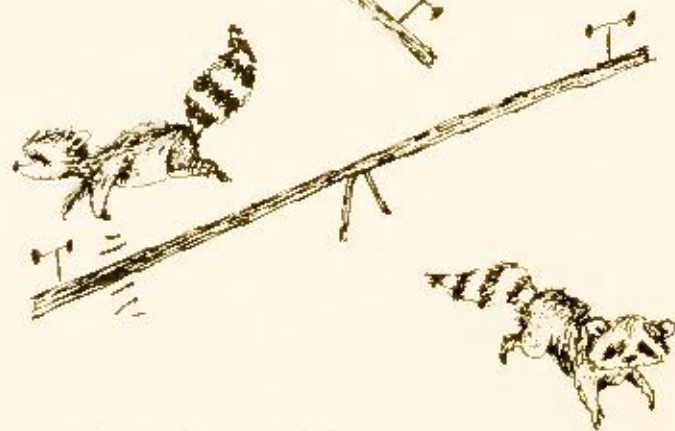
टक्कर!

फिर वह तेज़ी से कूदा.

वो चीज़ तालाब के ऊपर वाले पेड़ जैसी नहीं था.

फिर छोटे रैकून ने कुछ सूंघा.

उसे अच्छे खाने की तमाम चीज़ों की

एक अच्छी खुशबू आई.

सूँघो! सूँघो!

वो खुशबू यहीं से आई.

छोटे रैकून ने अंदर देखा.

वहां कितनी सारी अच्छी चीज़ें थीं!

एक चीज़ सबसे अच्छी थी.

लेकिन उसे खाना थोड़ा मुश्किल था.

उसके बाद छोटा रैकून

स्कंक्स के पास वापस भागा.

वह उन्हें बताने के लिए वापस दौड़ा

— उस चीज़ के बारे में जो उससे टकराई थी,

— और उस अच्छी खुशबू के बारे में,

— और खाने की लंबी-लंबी चीज़ों के बारे में.

"तुम यहीं रुको,"

छोटे रैकून ने कहा.

"मैं वापस आकर तुम्हें और बातें बताऊँगा."

उसके बाद छोटा रैकून फिर से घास पर दौड़ा.

यह क्या था?

वो ज़रूर कोई पेड़ होगा.

लेकिन उसके कितने बड़े पत्ते थे!

उस पर चढ़ना भी मुश्किल था.

छोटा रैकून बाड़ की तरफ दौड़ा.

फिर वह बाड़ से पेड़ पर कूदा.

तुरंत पेड़ घूमने लगा!

छोटा रैकून उतरना चाहता था.

वह फिर से कूदा, और फिर उसने

खुद को एक बड़े पत्ते पर बैठा हुआ पाया.

आखिरकार छोटा रैकून उतर गया.

वह स्कंक्स के पास वापस दौड़ा और उसने उन्हें

बाहरी दुनिया के पेड़ों के बारे में बताया.

"उनके पत्ते बहुत बड़े हैं,"

छोटा रैकून बोला, "और ज़रा अंदाज़ा लगाओ!"

वे पेड़ गोल-गोल घूमते हैं!"

"हम यहीं रुकेंगे,"

छोटे स्कंकों ने जल्दी से कहा.

"तुम वापस आकर हमें और बातें बता बताओ."

छोटा रैकून फिर

घास के रास्ते

जंगल के अंत तक दौड़ा.

उसने फिर चारों ओर देखा.

यह क्या था?

वहाँ नीचे क्या था?

छोटा रैकून देखने के लिए नीचे दौड़ा.

वहां कुछ खोलने को था.

छोटे रैकून ने उसे खोला.

वहां कुछ चढ़ने को था.

छोटा रैकून उस पर चढ़ गया.
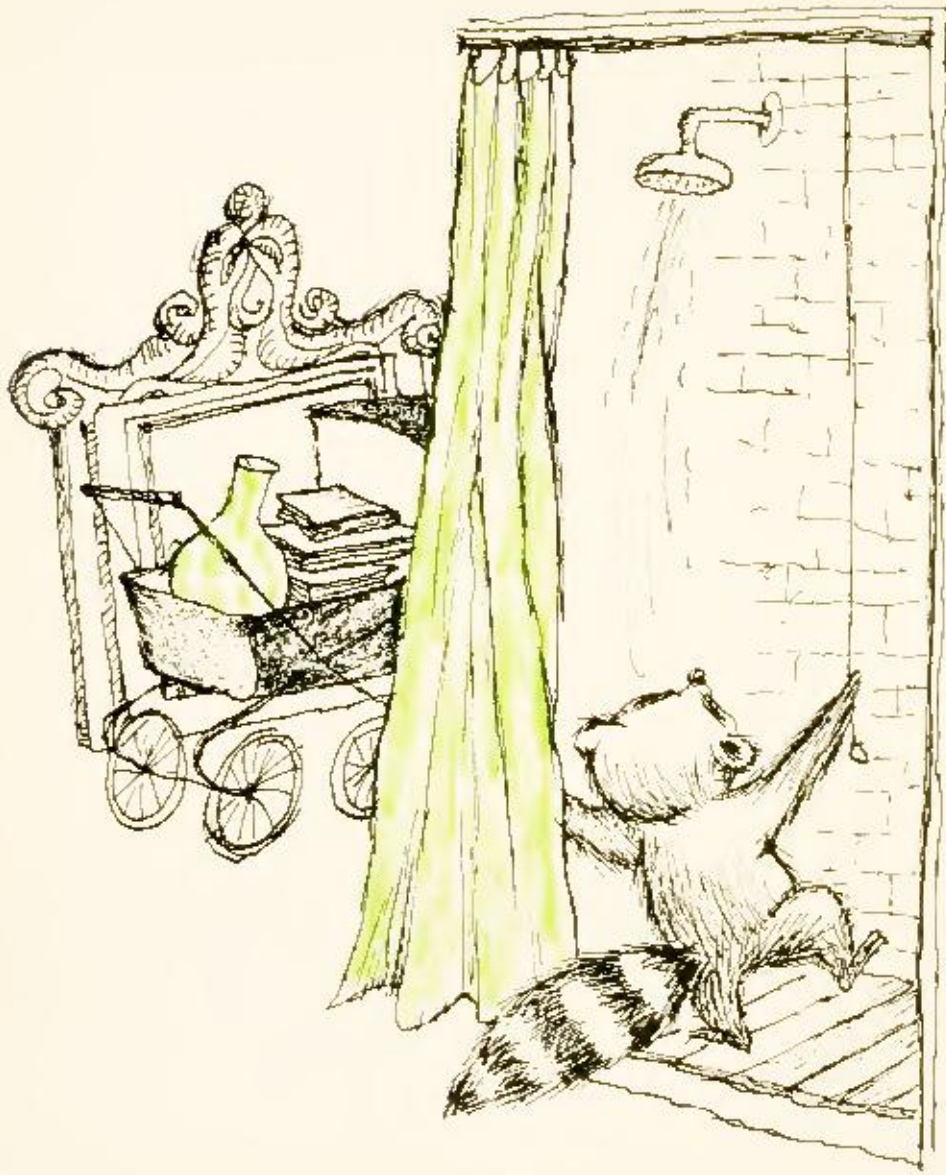
वहां कुछ खींचने को था.

छोटे रैकून ने उसे खींचा.

फुफकारता हुआ

पानी नीचे गिरने लगा.

ठंडा पानी.

फिर गर्म पानी.

फिर तेज़ गर्म पानी.

"बाप रे!" छोटा रैकून चिल्लाया,

और फिर वह तेज़ी से बाहर कूदा.

छोटा रैकून वापस दौड़ा गया

छोटे स्कंकों के पास.

"अंदाज़ा लगाओ!" वह चिल्लाया.

"बाहरी दुनिया में लोग

बारिश को कैद करके रखते हैं!

मैंने बारिश चालू कर दी!

और अंदाज़ा लगाओ -

वो बहुत गर्म बारिश थी!"

"बहुत गर्म बारिश!" छोटे स्कंक चिल्लाए.

"देखो, अब हम घर जाना चाहते हैं!"

छोटा रैकून भी चिल्लाया.

उसके पास अपनी माँ को बताने के लिए

बहुत सी बातें थीं.

"चलो!"

उसने छोटे स्कंकों से कहा.
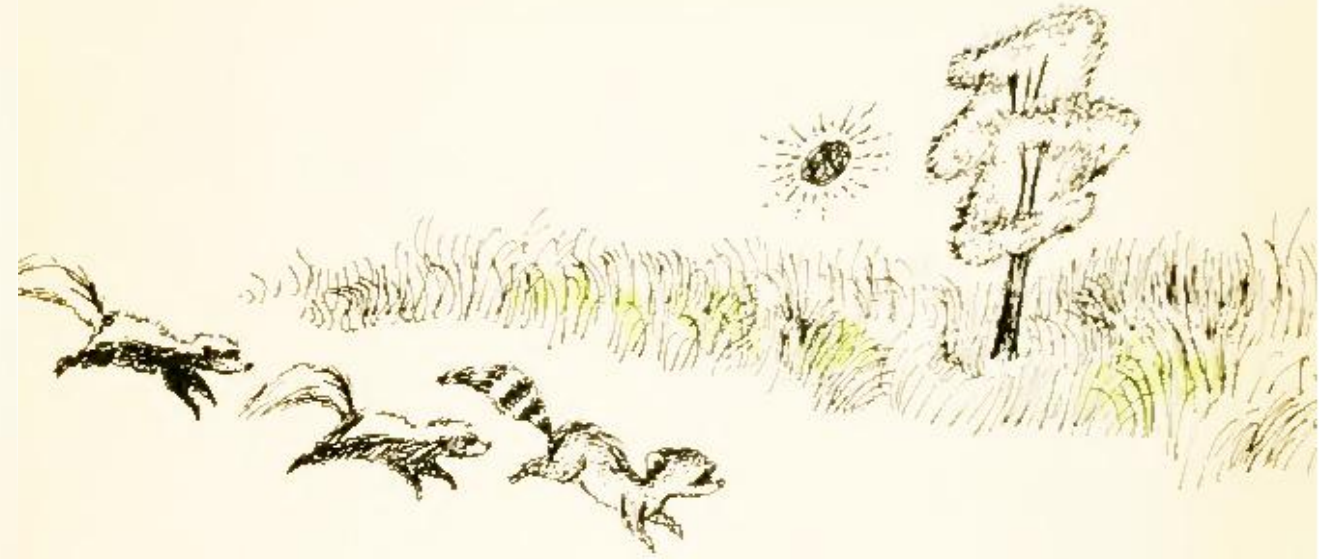
वे खुली घास के पार वापस भागे.

पर वहां वे एक छोटे से कीड़े के लिए भी नहीं रुके.

वे बेरी की झाड़ियों के पास से भागे.

लेकिन वे वहां एक मोटे चमकीले बेरी

के लिए भी नहीं रुके.
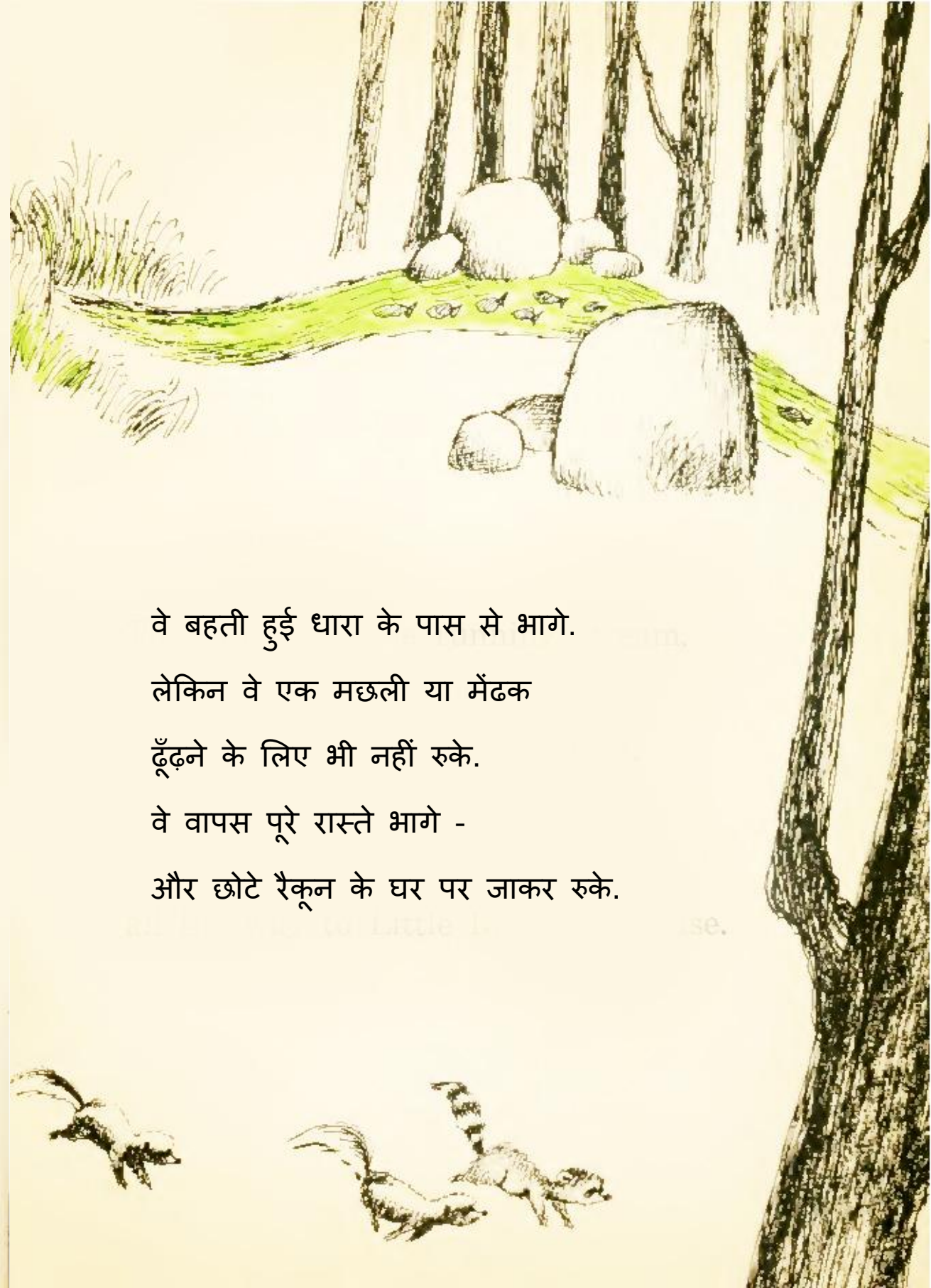
वे बहती हुई धारा के पास से भागे.

लेकिन वे एक मछली या मेंढक

ढूँढ़ने के लिए भी नहीं रुके.

वे वापस पूरे रास्ते भागे -

और छोटे रैकून के घर पर जाकर रुके.

"अंदाज़ा लगाओ!" छोटे स्कंक चिल्लाए.

"हम खुली घास तक गए,

और छोटा रैकून

बाहरी दुनिया देखने गया!"

"बाहरी दुनिया!" माँ स्कंक ने कहा,

"ज़रा सोचो!"

"क्या तुमने सच में ऐसा किया?" माँ रैकून ने पूछा,

"वहां पर कैसा था, छोटे रैकून?"

माँ स्कंक अभी भी माँ रैकून के साथ

बातचीन में मगन थी.

कैसा था?

छोटा रैकून सोचने लगा

—उन चीज़ों के बारे में जो टकराती थीं

—खाने के लिए लंबी-लंबी चीज़ों के बारे में,

—चारों ओर फैले पेड़ों के बारे में

—गर्म बारिश के बारे में.

"वो सब समझाना बहुत मुश्किल है,"

छोटे रैकून ने कहा.

बहादुर छोटा रैकून और दो छोटे स्कंक

बाहरी दुनिया की तलाश में हैं.

और बाहरी दुनिया तमाम आश्चर्यों से भरी है!